" मनुष्य के पूर्वज"

ए. एस. बलगीर
दिनांक: 01.06.1988.

सबसे पहले जब डारविन ने यह सिद्ध किया कि हमारे पूर्वज बन्दर थे तो सारे संसार में बहुत हंगामा मच गया । डारविन को बहुत बुरा-भला कहा गया मगर वे अपने विचारों पर डटे रहे । आजकल के वैज्ञानिकों ने यह सत्य मान लिया है कि मनुष्य क्रेब्र बंदरों की संतान हैं ।

हैरानी की बात यह है कि मनुष्य में आज भी वे सभी अवगुण विद्यमान हैं जो जानवरों में पाये जाते हैं । जानवर एक दूसरे का अधिकार खो लेते हैं, हेरा-फेरी कर लेते है, अपने स्वार्थ के लिए हर गन्दी हरकत करते हैं , कई बार दूसरों को मारते हैं, काटते हैं। बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है ।

जानवरों में भी गुण होते हैं। कुत्ते, हाथी और घोड़े जैसे जानवर मालिक के लिए बेहद वफादार पाये जाते हैं ।

लिउ टॉलसटॉय संसार का महान कहानीकार माना जाता है । "किसान की छोर वाली कहानी में उसने लिखा है कि वास्तव में जानवरों का खून मनुष्यों में हमेशा पाया जाता है । जब तक खून काबू में रहता है तो मनुष्य मानव की तरह बर्ताव करता है मगर जब वह अपने काबू से बाहर हो जाता है तो मनुष्य जानवरों के समान बन जाता है ।

आजकल जब हम संसार में इतनी गरीबी, भूखमरी, हेरा-फेरी, चालाकी देखते हैं तो यह साफ जाहिर हो जाता है कि मनुष्य इतना समय गुजर जाने के बाद भी जानवरों जैसा ही व्यवहार कर रहा है । यदि ऐसा न होता तो यह दुनिया कब की स्वर्ग बन गई होती ।

मनुष्य के जीवन का उद्देश्य जानवर जैसा बर्ताव न होकर इनसानियत जैसा व्यवहार होना चाहिये । चूंकि जानवर व इन्सान में केवल इतना ही अन्तर है कि जानवर अपने दिमाग का उपयोग कुरापतों में इस्तेमाल करता है , और इन्सान को अपना दिमाग सही कार्यों में लगाना चाहिये । इन्सान में इतनी समझ होती है कि किस कार्य को करने से किसको कितनी परेशानी, तकलीफ तथा अड़चनें पैदा हो सकती हैं और किसको कितना लाभ, आराम तथा आसानी हो सकती हैं ।मनुष्य का जीवन अनमोल है तथा मनुष्य को अपना जीवन परहित को ध्यान में रखकर ही व्यतीत करना चाहिये यहि मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है ।

"समाप्त"